डॉ.अर्जुन गणपति चव्हाण
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर।

संस्तुति

मैं संस्तुति करता हूं कि श्री.बजरंग शंकर कडीमाळी द्वारा लिखित **"कुसुम कुमार के नाटकों का अनुशीलन "** ('ओम् क्रांति क्रांति ', ' सुनो शेफाली ', ' दिल्ली ऊँचा सुनती है' के विशेष संदर्भ में) यह लघु शोध - प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

28.12.06

(डॉ.अर्जुन चव्हाण)
Head
Dept. of Hindi,
Shivaji University
Kolhapur-416004

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि : 28 DEC 2006

डॉ.सावंत एस्.एस्.
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
विलिंग्डन महाविद्यालय,
सांगली।

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री.बजरंग शंकर कडीमाळी ने मेरे निर्देशन में **" कुसुम कुमार के नाटकों का अनुशीलन "** ('ओम् क्रांति क्रांति ', ' सुनो शेफाली ', ' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' के विशेष संदर्भ में) लघु शोध - प्रबंध शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्.फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए लिखा है। पूर्व - योजनानुसार संपन्न कार्य में शोध - छात्र ने मेरे सुझावों का पूर्णतः पालन किया है। जो तथ्य इस लघु शोध - प्रबंध में प्रस्तुत किए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही है। शोध - छात्र के कार्य से मैं पूरी तरह से संतुष्ट हूँ। इस लघु शोध - प्रबंध को आद्योपांत पढ़कर ही मैं इसे परीक्षणार्थ अग्रेषित करने हेतु अनुमति प्रदान करता हूँ।

शोध - निर्देशक

28/12/2006

(डॉ.सावंत एस.एस्.)
प्रमुख
हिंदी विभाग
विलिंग्डन महाविद्यालय, सांगली.

प्रख्यापन

" **कुसुम कुमार के नाटकों का अनुशीलन** " ('ओम् क्रांति क्रांति ', ' सुनो शेफाली', ' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' के विशेष संदर्भ में) यह लघु शोध - प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्.फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए लघु शोध - प्रबंध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले इस या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

शोध - छात्र

Kadmali

(श्री.कडीमाळी बजरंग शंकर)

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि : 28 DEC 2006

कुसुम कुमार

जन्मतिथि- 5 अगस्त, 1939

प्राक्कथन

नाटक के प्रति हमेशा मेरे मन में आकर्षण रहा है। अपने दृश्यत्व के कारण दर्शक - पाठक को प्रभावित करनेवाली विधा ने मुझे एम.ए. के अध्ययन के समय अधिक आकृष्ट किया और मैं मोहन राकेश, डॉ.शंकर शेष, जयशंकर प्रसाद, मृणाल पांडे, कुसुम कुमार, गिरिराज किशोर आदि अनेक नाटककारों के नाटक पढ़ता रहा। तब मुझे नाटक का शिल्प, भाषा, पात्र, वेशभूषा, अभिनय, मंचसज्जा आदि का परिचय हुआ। हिंदी नाट्य साहित्य में कुसुम कुमार का अलग स्थान। आपके द्वारा लिखित ' सुनो शेफाली ' नाटक मुझे काफी आकर्षित किया। जैसे ही मैंने उसको पढ़ा तब मैंने यह तय किय कि क्यों न मैं कुसुम कुमार के नाटक साहित्य को अपने एम्. फिल. के लघु शोध - प्रबंध के लिए ले लूँ। आदरणीय गुरूवर्य डॉ.साताप्पा सावंतजी से मैंने प्रस्तुत विषय के बारे में चर्चा की तब उन्होंने इस विषय पर मुझे मार्गदर्शन करने की स्वीकृति दी। कुसुम कुमार का नाटक साहित्य विस्तृत है। अत: एम्.फिल. शोध - प्रबंध के अध्ययन हेतू रचनाक्रम की दृष्टि से तीन नाटकों को लिया है। जो सन् 1978 से 1982 ई तक के हैं। उपर विवेचित तीन नाटकों को एम्.फिल. लघु शोध - प्रबंध के अध्ययन का विषय बनाया है।

कुसुम कुमार बहुमुखी प्रतिभा लेकर हिंदी साहित्य में अवतीर्ण हुई है। कुसुम कुमार नवें दशक के श्रेष्ठ नाटककार है। इनके नाटकों में प्रयोगधर्मिता का एहसास गहरा है।

कुसुम कुमार के नाटकों में समाज के प्रत्येक स्तर का वर्णन दिखाई देता है। उन्होंने समाज में जो बारीकी से देखा, भोगा उसी को अपनी कलम द्वारा उतारा है। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षिक आदि विविध विषयों से संबंधित कुसुम कुमार ने नाटक लिखा है।

अनुसंधान के प्रारंभ में मेरे सामने निम्नांकित प्रश्न उजागर हुए थे -

1. कुसुम कुमार की जीवन - यात्रा किन - किन पड़ावों से गुजरी है ?
2. कुसुम कुमार के नाटकों के कथानक की विशेषताएँ क्या है? और कथानक किस प्रकार के है ?
3. कुसुम कुमार के नाटकों में नाटक के तत्वों का कैसे निर्वाह हुआ है ?
4. कुसुम कुमार ने अपने नाटकों में नारी जीवन को किस तरह से चित्रित किया है ?
5. कुसुम कुमार के नाटकों में किन -किन समस्याओं का चित्रण हुआ है ?

विवेच्य नाटकों के अध्ययन के उपरान्त उपर्युक्त प्रश्नों के जो उत्तर मुझे प्राप्त हुए उन्हें

आधार मानकर निकाले गए निष्कर्ष उपसंहार में दिए हैं। लघु शोध - प्रबंध की सीमा और व्याप्ति को ध्यान में रखकर मैंने अपने लघु शोध - प्रबंध को निम्नांकित पाँच अध्यायों में विभाजित करके शोध का विवेचन विश्लेषण किया है।

प्रथम अध्याय का शीर्षक है - " कुसुम कुमार : व्यक्तित्व एवं कृतित्व।" इस अध्याय के अंतर्गत कुसुम कुमार के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के विभिन्न पहलुओं को तलाशने का प्रयास किया है। उनके जीवन - परिचय के अंतर्गत - जन्म - तिथि, जन्म - स्थान, माता - पिता, पति - संतान, पारिवारिक जीवन, शिक्षा, नौकरी, प्रेरणा आदि बातों का विवेचन किया है। साथ - साथ उनके बहुआयामी व्यक्तित्व की विशेषताओं जैसे - बहूभाषज्ञता, साहसी, ममता - मूर्ति मां, वैदिक धर्म के प्रति अगाध प्रेम, शिक्षा - प्रेमी, कला - प्रेमी आदि का परिचय दिया है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष दिए हैं।

द्वितीय अध्याय का शीर्षक है - " विवेच्य नाटकों का सामान्य परिचय। " प्रस्तुत अध्याय में कुसुम कुमार के विवेच्य नाटकों का सामान्य परिचय दिया है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष दर्ज किए हैं।

तृतीय अध्याय का शीर्षक है - " विवेच्य नाटकों का तात्विक विवेचन।" प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत विद्वानों द्वारा स्वीकृत नाटकों संबंधी आधुनिक तत्वों के आधार पर विवेचन प्रस्तुत किया है। कथावस्तु, पात्र या चरित्र - चित्रण, कथोपकथन या संवाद, देशकाल और वातावरण, भाषाशैली, उद्देश्य, शीर्षक की सार्थकता आदि का विवेचन देकर संक्षेप में निष्कर्ष दिया हैं।

चतुर्थ अध्याय का शीर्षक है - " विवेच्य नाटकों में चित्रित नारी जीवन।" प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत रिश्ते - नाते तथा संबंधों के आधार पर नारी के विविध रूप और नारी के अन्य रूपों का विवेचन प्रस्तुत किया है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष दर्ज किए हैं।

पंचम अध्याय का शीर्षक है - " विवेच्य नाटकों में चित्रित समस्याएँ।" प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, प्रशासनिक, शैक्षिक समस्याओं का विवेचन किया है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष दर्ज किए हैं।

अंत में ' उपसंहार ' के रूप में इस लघु शोध - प्रबंध का सार रूप दिया है। तदुपरान्त परिशिष्ट एवं संदर्भ ग्रंथ - सूची दी है।

प्रस्तुत शोध कार्य की मौलिकता -

1. प्रस्तुत लघु शोध- प्रबंध में कुसुम कुमार व्यक्तित्व एवं कृतित्व का समग्र लेखा - जोखा वस्तुनिष्ठ रूप में प्रस्तुत किया है।
2. कुसुम कुमार के विवेच्य नाटकों का तात्विक विवेचन विद्वानों द्वारा स्वीकृत नाटकों संबंधी आधुनिक तत्वों के आधार पर किया है।
3. कुसुम कुमार के विवेच्य नाटकों में चित्रित सं समस्याओं का गहराई से विवेचन - विश्लेषण किया है।
4. कुसुम कुमार के नाटकों का अनुशीलन को अध्ययन का केंद्रबिंदू मानकर प्रस्तुत लघु शोध - प्रबंध में प्रथमतः ही अनुसंधान हुआ है।

ऋणनिर्देश

प्रस्तुत लघु शोध - प्रबंध को सफल बनाने में जिन विद्वानों का एवं स्नेहियों का प्रोत्साहन एवं सहयोग मिला उन सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं केवल औपचारिकता न समझकर आद्य कर्तव्य समझता हूं।

प्रस्तुत लघु शोध - प्रबंध की पूर्ति श्रद्येय गुरूवर्य आदरणीय डॉ.साताप्पा शामराव सावंत अध्यक्ष, हिंदी विभाग, विलिंग्डन महाविद्यालय, सांगली के कृपापूर्ण, आत्मीय एवं कुशल निर्देशक का फल है। मैं आप तथा आपके परिवार के प्रति सहृदय से कृतज्ञता प्रकट करता हूं।

मैंने जिस विषय पर अनुसंधान कार्य किया है उस नाटक साहित्य का रचनाकार कुसुम कुमार जी के सहयोग के बिना प्रस्तुत लघु शोध - प्रबंध की पूर्ति ही नहीं होगी। कुसुम कुमार जी ने अपनी व्यस्तताओं में भी मुझे यथायोग्य सहयोग दिया। अतः मैं उनके प्रति सहृदय से कृतज्ञ हूं।

अब - तक के शिक्षा जीवन में मुझे गुरूजनों का बड़ा आत्मीय प्यार तथा प्रेरणा मिलती रही है। इनमें प्रमुख रूप से 'शिवाजी विश्वविद्यालय' के हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ.अर्जुन चव्हाण जी तथा पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो.डॉ.पांडुरंग पाटील जी, ' मथुबाई गरवारे कन्या महाविद्यालय' सांगली के हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ.रघुनाथ जी.देसाई, 'डॉ.पतंगराव कदम महाविद्यालय' सांगलवाडी के हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ.बी.डी.पाटील जी आदि गुरूजनों ने मुझे प्रस्तुत अध्ययन में यथायोग्य मार्गदर्शन किया। ऐसे गुरूजनों के प्रति सहृदय से कृतज्ञ हूं।

मेरे जीवन का कार्य माता - पिता के बिना संपन्न नहीं हुआ है। इन्हीं के आशीर्वाद का फल है कि मैं अपने कार्य की पूर्ति में सफल हुआ हूं। आज मैं जो कुछ भी हूं, उन्हीं के बदौलत हूँ। माता - पिताजी का अपार कष्ट, स्नेह, कष्ट पर अड़िग विश्वास रखने की मनो - भावना तथा संस्कार मुझे नित्य सत्कर्म की प्रेरणा देते रहें हैं। ईश्वर से यही प्रार्थना करता हूं कि उनके कष्ट और यातनाओं को विराम देने के मेरे प्रयत्न को सफलता दे। परिवार की जिम्मेदारी निभानेवाले मेरे बड़े भाई गजानन तथा भाभी सौ.लता जी के प्रति आजन्म ऋणी हूं। मेरी बड़ी बहन महानंदा, सुनिता, बहनोई कल्लाप्पा माळी, साहेबराव माळी, भानजे सुनील, सतिश की प्रेरणा मैं भूल नहीं सकता, मैं आजन्म उनके ऋण से मुक्त होना नहीं चाहता।

मेरे बड़े भाई समान मानसिक आधार तथा प्रेरणा देनेवाले परम मित्र जितेंद्र कांबळे, विष्णु नरूटे, प्रकाश जाधव, श्रीशैल कोरे, प्रदीप कौलगुड, शौकत अत्तार, बलवंत मगदूम,

ऐलाप्पा वाघमोडे, किरण शिवणकर, शहाजी पारसे आदि की प्रेरणा के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ।

मेरे शिक्षा - जीवन के सहपाठी, अन्य शुभाकांक्षी तथा अनेक आदर्श मित्र और एम्.फिल्. के साथी और सहेलियों का भी इस लघु शोध - प्रबंध के कार्य की पूर्ति में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष सहयोग प्राप्त हुआ है। अतः इन सभी के प्रति मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

प्रस्तुत लघु शोध - प्रबंध के लिए आवश्यक संदर्भ ग्रंथों की प्राप्ति ' बॅरिस्टर बाळासाहेब खर्डेकर ग्रंथालय, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, मथुबाई गरवारे कन्या महाविद्यालय सांगली, विलिंग्डन महाविद्यालय से हुई। अतः इन ग्रंथालयों के ग्रंथालय अध्यक्ष तथा अन्य सभी कर्मचारियों का ऋणी हूँ।

इस लघु शोध - प्रबंध को आकर्षक एवं यथोचित रूप में टंकन करनेवाले ' पूर्वा टायपिंग', विश्रामबाग, सांगली के संचालक श्री.हनुमंत उपळावीकर और श्री.सिध्देश्वर जोशी का भी आभारी हूं। साथ ही जिन ज्ञात - अज्ञातों की शुभकामनाएँ मुझे प्राप्त हुई उन सबके प्रति आभार प्रकट कर मैं लघु शोध - प्रबंध को अत्यंत विनम्रता से विद्वानों के सामने परीक्षणार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

शोध - छात्र

(श्री.बजरंग शंकर कडीमाळी)

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि 28 DEC 2006